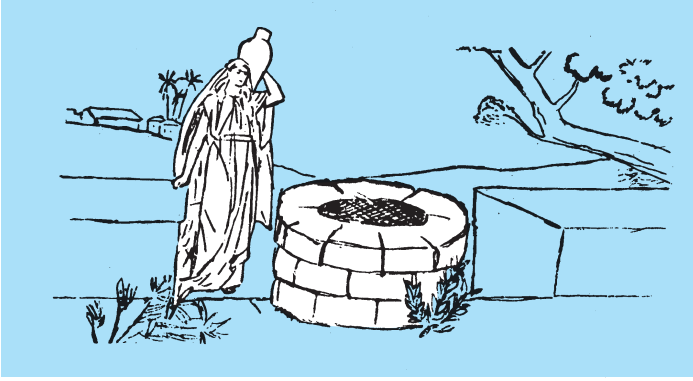


प्रभु दयालु है !



प्रभु सचमुच ही दयालु है। हमें कितना धन्यवादित होना चाहिये कि जिस परमेश्वर ने हमें रचा तथा बनाया है वह दया, प्रेम तथा अनुग्रह से परिपूर्ण है। क्योंकि हम सब तो पापी हैं और हमें उसकी दया की बहुत बड़ी आवश्यकता है। बाइबिल कहती है, "परमेश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, विलम्ब से कोप करने वाला और अति करुणामय है।" (भजन १०३:८)।

हमको तथा उन सब वस्तुओं को, जिन्हें हम देखते हैं, बनाने वाला परमेश्वर हमारे अनन्त उद्धार तथा आशीष में गहरी रुचि रखता है। बाइबिल कहती है कि परमेश्वर "हमारे विषय में धीरज रखता है और नहीं चाहता कि कोई नाश हो, वरन यह कि सबको मनफिराव का अवसर मिले" (२ पतरस ३:९)।

फिर भी कुछ ऐसे लोग हैं जो आशा करते हैं कि चूँकि परमेश्वर दयालु हैं, इसलिए वह उनके पापों पर तनिक भी ध्यान न देगा और वे जैसे हैं, वैसे ही उन्हें स्वर्ग में ग्रहण कर लेगा।

बाइबिल जो हमें बतलाती है कि परमेश्वर दयालु है, चेतावनी भी देती है कि "जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है" (इब्रानियों १०:३१)। परमेश्वर की दया के विषय में ऐसी बातें करना बहुत सरल है जिनसे लगे कि वह पाप को मामूली बात समझेगा, जैसा कि हम प्रायः सोचते हैं। अन्य लोग सोचते हैं कि क्योंकि वह प्रेममय हैं इसलिए वह उनके पापों पर बिल्कुल ध्यान नहीं देगा। परन्तु पवित्र परमेश्वर की दृष्टि में पाप एक भयानक बात है।

परमेश्वर का वचन, बाइबिल बतलाती है कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है (रोमियों ३:२३), और कि "पाप की मजदूरी मृत्यु है" (रोमियों ६:२३)। इस पृथ्वी पर हम न्यायालय के न्याय से तो बच सकते हैं, परन्तु जिससे हमें काम है, उसकी आँखों के सामने सब वस्तुएँ खुली तथा बेपरद हैं (इब्रानियों ४:१३)।

प्रिय पाठकों, हम जो गिरे हुए पापी हैं, किस प्रकार उद्धार पा सकते हैं? जिसके विरुद्ध आज्ञा न मानने और विद्रोह करने के हम अपराधी हैं, ऐसा पवित्र परमेश्वर कैसे हम पर दया दिखा सकता है? यहीं पर नाशवान जगत् के लिये परमेश्वर का प्रेम, जो सुसमाचार में अद्भुत कहानी के रूप में है, हमें दिया गया है। अपने अलौकिक प्रेम के कारण परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया "ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए" (यहन्ना ३:१६)। इस पृथ्वी पर जीवन ग्रहण करने वाले मनुष्यों में प्रभु यीशु मसीह ही एक ऐसा था जो पवित्र, निष्कलंक तथा सिद्ध था। वह परमेश्वर का पुत्र है। परन्तु क्रूस पर उसने अपने शरीर पर, अपने सब विश्वास करने वालों के पापों को उठा लिया और उन पापों के लिए परमेश्वर के न्याय को मह लिया है (१ पतरस २:२४)। पवित्रशास्त्र के अनुसार प्रभु यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया.....और गाड़ा गया और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा" (१ कुरिन्थियों १५:३-४)।

तो हमारा उद्धार कैसा होता है? क्या यह हमारे भले कामों द्वारा होता है? क्या यह हमारे धर्म के कारण, अथवा गिरजाघर या मन्दिर में उपस्थित होने से होता है? क्या हम स्वयं कोई दुःख उठाकर स्वर्ग में अपने लिये स्थान प्राप्त कर सकते हैं? नहीं, मेरे मित्र, इनमें से कोई एक भी ऐसा कुछ नहीं कर सकता। उद्धार एक वरदान है। बाइबिल

कहती है, "परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है" (रोमियों ६:२३)। उद्धार हमारे द्वारा किये गए भले कामों का प्रतिफल नहीं, इसलिए हम में से कोई भी अपनी बड़ाई नहीं कर सकता। हम अपने उद्धार के बदले में परमेश्वर को कुछ भी नहीं दे सकते हैं, क्योंकि यह एक दान है और दान को कृतज्ञ हृदय से ग्रहण करना होता है।

जब आप परमेश्वर के सामने स्वीकार करते हैं कि आपने उसके विरुद्ध पाप किया है और आप गिरे हुए हैं तथा आपको एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है तो परमेश्वर अनुग्रहपूर्वक मसीह तथा उनके द्वारा क्रूस पर आप के लिए किए गए कार्य की ओर आपका ध्यान दिलाएगा। यदि आप सरल विश्वास से मान लेते हैं कि यीशु मसीह आपके लिए मर गया तो परमेश्वर सचमुच आप पर अद्भुत दया दिखाएगा तथा इस जीवन और अनन्तकाल के लिए आप को पाप से बचा लेगा। उद्धार जो मसीह में विश्वास रखने से आता है, पहले से ही आपके निकट है, वास्तव में यह इतना समीप है, जितना हमारे हृदय और मुँह। जब आप अपने मुँह से दूसरों को बताते हैं कि मसीह यीशु आप का प्रभु है और अपने हृदय में विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने मसीह को मृतकों में से जिलाया है तो आप उद्धार पाएँगे। क्योंकि अपने हृदय में विश्वास करने से कोई व्यक्ति परमेश्वर की दृष्टि में ठीक बनता है और अपने मुँह से वह दूसरों को अपने विश्वास के विषय में बताकर अपने उद्धार को दृढ़ करता है। क्योंकि पवित्रशास्त्र में लिखा है कि मसीह में विश्वास करने वाला कोई भी व्यक्ति कभी निराश नहीं होगा।

परमेश्वर का सबको निमन्त्रण है, "हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा" (मत्ती ११:२८)।

याद रखिए कि परमेश्वर पाप से आँख नहीं मूँद सकता। यदि हम मसीह के बिना, अपने पापों में मरते हैं तो हम कभी भी स्वर्ग में न जा सकेंगे। नरक तथा आग की झील ही हमारा अनन्त निवास होगा।

"परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।" यदि हम अपने पापों को उसके सामने मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है (१ यूहन्ना १:७-९)।

यदि आप इस विषय में अधिक जानना चाहते हैं, तो कृपया निम्न पते पर लिखिए :-

**क्योंकि जब हम
निर्बल हो थे,
तो मसीह
ठीक समय पर
भक्तिहीनों के
लिये मरा।**

रोमियों ५:६

The Light of Hope
Cheppad P.O., Alappuzha Dist - 690 507
Kerala State, India